(हफ़्तावार रिसाला : 196
Weekly Booklet : 196)

Apni Pareshani Zaahir Karna Kaisa ? (Hindi)

अपनी परेशानी ज़ाहिर करना कैसा ?

सफ़हात 20

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُستَطرَف ج ۱ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"अपनी परेशानी ज़ाहिर करना कैसा ?"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इस रिसाले का मवाद मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त 106 से लिया गया है

अपनी परेशानी ज़ाहिर करना कैसा ?[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला : **"अपनी परेशानी ज़ाहिर करना कैसा ?"** पढ़ या सुन ले, उसे अपनी रिज़ा के लिये मुसीबतों पर सब्र और बहुत ज़ियादा अज्र अ़ता कर और उसे जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे नबी ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का पड़ोस नसीब फ़रमा । اٰمِيْن بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा । (ترمذی،2/27،حدیث:484)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

अपनी परेशानी ज़ाहिर करना कैसा ?

सुवाल : सब्र और बरदाश्त में क्या फ़र्क़ है ? क्या अपनी परेशानी भी किसी को नहीं बता सकते ? (मुह़म्मद आ़मिर अ़त्तारी, कोलम्बो श्रीलंका)

1...... येह रिसाला 16 जुमादल ऊला 1441 हि. ब मुत़ाबिक़ 11 जनवरी 2020 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले मदनी मुज़ाकरे का तह़रीरी गुलदस्ता है, जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत" ने मुरत्तब किया है । (शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत)

जवाब : ग़ालिबन सब्र का मा'ना उर्दू में बरदाश्त करना ही होता है। रहा येह सुवाल कि "अपनी मुसीबतें दूसरों को बताना" इस में बा'ज़ अवक़ात बे सब्री सामने आ जाती है। अगर कोई किसी बुज़ुर्ग, इमामे मस्जिद या आ़लिमे दीन को अपनी मुसीबत इस लिये बता रहा है ताकि वोह उस के लिये दुआ़ करें, या किसी डॉक्टर को बता रहा है ताकि वोह उस की बीमारी का इ़लाज करे और इतना बता रहा है जितना बताने की ह़ाजत है तो येह बे सब्री में नहीं आएगा और सवाब भी ज़ाएअ़ नहीं होगा। बा'ज़ लोग डॉक्टर को अपनी बीमारी बताते हुए भी बहुत मुबालग़ा करते हैं। बुख़ार हुवा है तो कहेंगे कि "शदीद बुख़ार है।" दर्द हो रहा है तो कहेंगे कि "शदीद दर्द है।" अगर शदीद है तो शदीद कहने में ह़रज नहीं है, लेकिन बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता नहीं है। पहले कहा करते थे कि "दवाख़ाने जा रहा हूं, या अम्मी को दवाख़ाने ले जा रहा हूं।" अब कहते हैं कि "अम्मी को हस्पताल ले जा रहा हूं" क्यूं कि हस्पताल का नाम भारी है, इस लिये हमदर्दी लेने के लिये येह लफ़्ज़ इस्ति'माल किया जाता है, ह़ालां कि इस की जगह क्लीनिक भी बोला जा सकता है। हस्पताल का नाम सुन कर आदमी थोड़ा चौंकता है, इस लिये अगर कभी हस्पताल जा भी रहे हों तो येह वज़ाह़त कर देनी चाहिये कि "सिर्फ़ चेकअप के लिये हस्पताल जा रहा हूं।" अपनी मुसीबत ज़रूरतन बयान कर सकते हैं, बढ़ा चढ़ा कर और मुबालग़े के साथ बयान न की जाए।

बा'ज़ लोग वैसे नॉर्मल होते हैं, लेकिन दूसरे के देखते ही बीमार जैसा मुंह बना लेते और बीमारी वाला अन्दाज़ इख़्तियार कर लेते हैं। मैं एक जगह किसी की इ़यादत के लिये गया, वोह अच्छा ख़ासा बैठा हुवा था, लेकिन मुझे देखते ही लैट गया और चादर तान ली, अब उस का नसीब

कि मैं उसे देख चुका था। बहर हाल ! मैं ने भी उसे कुछ नहीं बोला कि "ड्रामा छोड़ो !" ताकि वोह शरमिन्दा न हो, लेकिन ज़ाहिर है कि येह ड्रामा ही था कि कोई इयादत करने आए तो उसे बीमार बन कर दिखाओ ताकि वोह ख़ूब हमदर्दियां करे। जो अपने बीमार होने का झूटा इज़्हार करता है उस के लिये ह़दीसे पाक में वईद मौजूद है कि वोह जैसा इज़्हार कर रहा है, कहीं वैसा ही बीमार न हो जाए। (فردوس الاخبار، 2/421، حدیث:7624)

इस लिये अगर किसी के सामने इज़्हार करना है तो उतना ही करें जितना करने की ज़रूरत है। आज कल लोग हर त़रह़ की बीमारी बल्कि मा'यूब बीमारियों का भी इज़्हार कर देते हैं। ह़ालां कि एक दौर वोह था कि पेट में भी दर्द होता तो बताते हुए शरमाते थे। हां ! ज़रूरतन डॉक्टर को बताया जा सकता है, लेकिन उसे बताने में भी अच्छे अल्फ़ाज़ का इन्तिख़ाब किया जाए कि "थोड़ा पेट का मस्अला है।" ह़ज़रत इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने येह वाक़िआ़ नक़्ल फ़रमाया है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ عَنْه की बग़ल में फोड़ा हुवा था। किसी ने आज़्माने के लिये कि देखो ! येह क्या जवाब देते हैं ? पूछा कि क्या हुवा है ? आप ने फ़रमाया : हाथ के अन्दर की त़रफ़ फोड़ा हुवा है। (احیاء العلوم، 3/151 مفہوماً) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लफ़्ज़ "बग़ल" बोलने से भी शरमाए। हम में से कोई होता तो शायद बग़ल उठा कर दिखा भी देता। हमारे हां तो जहां जहां तक्लीफ़ है बा'ज़ अवक़ात वहां का पूरा नक़्शा खींच कर बताया जा रहा होता है। **अल्लाह** करीम हम सब को "उ़स्माने बा ह़या" का सदक़ा नसीब फ़रमाए और शर्मो ह़या की दौलत अ़त़ा करे। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه ऐसे बा ह़या थे कि बन्द कमरे में भी लिबास तब्दील करते हुए शर्म के मारे सुकड़ जाते थे। (مسند امام احمد، 1/160، حدیث:543 مفہوماً)

बिला ज़रूरत तक्लीफ़ का इज़्हार न कीजिये

सुवाल : बा'ज़ अवक़ात इन्सान जब किसी के सामने ख़ूब गिले शिक्वे करता है और सामने वाला नरमी करते हुए कहता है कि "सब्र कीजिये !" तो वोह जवाब में कहता है कि "बस जी, सब्र ही तो कर रहे हैं।" ऐसों के बारे में क्या फ़रमाते हैं ? (रुक्ने शूरा अबुल ह़सन ह़ाजी मुह़म्मद अमीन अ़त्त़ारी)

जवाब : ह़दीसे पाक में है कि "सब्र तो अव्वल सदमे में होता है।" (بخاری، 1/434، حدیث:1283) बा'द में तो सब्र आ ही जाता है। इस लिये जैसे ही तक्लीफ़ आए बन्दा बोले नहीं, बस चुप हो जाए और अपनी बोडी लेंग्वेज से भी ऐसा इज़्हार न करे कि सामने वाला येह समझे कि इसे कोई तक्लीफ़ है, क्यूं कि अगर कोई भले चुप रहे, लेकिन मुंह बिगाड़े, आह, ऊह करे तो ज़ाहिर है कि सामने वाला पूछेगा कि क्या हुवा ? ऐसे में बन्दा बोले कि ख़ुद थोड़ी बताया है, इस ने पूछा है तो बताया है, ह़ालां कि अपने जिस्म या चेहरे पर बोर्ड चढ़ा रखा था कि मुझ से पूछो कि क्या तक्लीफ़ है ? जभी उस ने आ कर पूछा है। यूं त़रह़ त़रह़ की टेक्नीक (Technique) होती है। اِنَّمَاالْاَعْمَالُ بِالنِّیَّاتِ۔ (या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है)। (بخاری،1/6،حدیث:1) बिला ज़रूरत किसी के सामने तक्लीफ़ का इज़्हार करने से सब्र की मन्ज़िल हाथ से निकल जाती है। और येह बहुत मुश्किल काम है, क्यूं कि अगर किसी का मोबाइल छिन जाए या जेब कट जाए तो वोह मुस्कुराते हुए चुपचाप मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत नहीं करेगा, बल्कि लोगों को पकड़ पकड़ कर बोलेगा कि "मेरा मोबाइल गन पोइन्ट पर ले लिया, मुझे मारने की धमकी दे रहे थे, झगड़ा करता तो फ़ायर कर देते" यूं बन्दा हमदर्दियां ह़ासिल करता है। बा'ज़ अवक़ात मुसीबत सुन कर भी सामने

वाले के कान पर जूं तक नहीं रींगती और बन्दे की नाक कट जाती है, सामने वाला सिर्फ़ "अच्छा" कह कर निकल जाता है, इस लिये बन्दे को क्या बोलना ! **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की जाए और दुआ़ मांगी जाए दुआ़ मांगना बे सब्री नहीं है। घर में चोरी हो जाए या आग लग जाए या कोई नुक़्सान हो जाए या बच्चा और मां बाप बीमार हो जाएं तो बिला ज़रूरत किसी को न बोलें, बोलना पड़े तो ज़रूरतन बोलें। 100 (लोगों) को बताने की ज़रूरत है तो 100 को बताएं वरना एक को भी नहीं। मसलन घर में किसी का इन्तिक़ाल होना एक मुसीबत है, बल्कि बन्दे पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ता है। अब ऐसे में बन्दा लोगों को इस मुसीबत का बताएगा, क्यूं कि वोह जम्अ़ होंगे और जनाज़ा पढ़ेंगे। येह सूरत ठीक है। इस में भी रोने धोने और ऐसे अन्दाज़ से ग़म ज़ाहिर करने से बचना होगा जिसे बे सब्री कहा जाए। आंसू बहना बे सब्री नहीं है, क्यूं कि येह ख़ुद ब ख़ुद आ रहे हैं। ऐसी कैफ़िय्यत न बनाए जिस से ख़ूब ग़म का इज़्हार हो, जैसे औ़रतों में येह आ़दत ज़ियादा होती है कि अकेले होंगी तो चुप होंगी, लेकिन जैसे ही कोई मिलने या ता'ज़ियत करने आएगी तो रोना शुरूअ़ कर देंगी और बताएंगी कि येह हो गया है। इस त़रह़ के असरात कुछ मर्दों में भी मौजूद होते हैं। येह बे सब्री है। **अल्लाह** करीम हम सब को ह़क़ीक़ी मा'नों में सब्र अ़त़ा फ़रमाए। सब्र जन्नत का ख़ज़ाना है। काश ! हम को नसीब हो जाए। नफ़्सो शैत़ान सब्र करने नहीं देते, क्यूं कि जन्नत का ख़ज़ाना जब इतनी आसानी से मिल रहा होगा तो नफ़्सो शैत़ान कहां ह़ासिल करने देंगे ! हम **अल्लाह** पाक से तौफ़ीके ख़ैर व भलाई की दरख़्वास्त करते हैं कि हम को वाक़ेई सब्र अ़त़ा कर दे और सब्र करने वाले इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का सदक़ा नसीब हो जाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

क्या सेल्फ़ी लेते हुए मरना ख़ुदकुशी है ?

सुवाल : जो लोग बुलन्द मक़ामात से सेल्फ़ी (Selfie) लेते हुए गिर कर मर जाते हैं, क्या उन पर ख़ुदकुशी का हुक्म लगेगा ?

जवाब : येह लोग जान बूझ कर अपनी जान को ख़त्म नहीं करते, इस लिये इन पर ख़ुदकुशी का हुक्म नहीं लगेगा। अलबत्ता इतना ज़रूर है कि ऐसा करना इन के लिये शरअ़न दुरुस्त न था। क़ुरआने करीम में है : ﴿وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۚ﴾ (پ2،البقرۃ:195) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो)। येह लोग अपनी बहादुरी बल्कि ह़माक़त के चक्कर में आ कर सिर्फ़ येह दिखावा करने के लिये कि "मैं बड़ा हिम्मत वाला हूं, देखो ! मैं ने कैसी सेल्फ़ी बनाई है" अपनी जान ख़त़रे में डाल देते हैं और बा'ज़ अवक़ात मौत के मुंह में चले जाते हैं। कोई ट्रेन से कुचला जाता है तो कोई छत या किसी इमारत से गिर पड़ता है। कुछ अ़र्से पहले हिन्द की एक वीडियो Viral (या'नी आ़म) हुई थी जिस में एक मुसल्मान नौ जवान शेर के साथ सेल्फ़ी बनाते हुए ऊंची दीवार से शेर के पिंजरे में गिर गया था और शेर उसे घसीटता हुवा ले गया था, लेकिन इस दौरान उस नौ जवान का हार्ट फ़ेल हो चुका था। **अल्लाह** पाक उस की मग़्फ़िरत फ़रमाए और ग़रीक़े रह़मत करे। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सेल्फ़ी बहुत ख़त़रनाक चीज़ है, अलबत्ता बा'ज़ अवक़ात ख़त़रनाक नहीं भी होती, लेकिन इस की वज्ह से लोगों को बस एक मसरूफ़िय्यत मिल गई है। मौत अगर लिखी हो तो किसी बहाने भी आ जाती है और इन्सान को समझ नहीं पड़ती जिस की वज्ह से इन्सान कोई ऐसी ह़रकत कर गुज़रता है और फिर मौत के मुंह में चला जाता है। **अल्लाह** पाक हम सब की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए।

तक़्दीर में सब लिखा है तो मेह़नत क्यूं ?

सुवाल : अगर तक़्दीर में हर चीज़ लिख दी गई है तो हमें मेह़नत करना क्यूं ज़रूरी है ? (अ़ली रज़ा । SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : अगर तक़्दीर में सख़्त सर्दी से ठिठर कर मरना लिख दिया गया है तो गर्म कपड़े क्यूं पहनते हो !! अगर क़िस्मत में चोरी लिख दी गई है तो दरवाज़ा बन्द करने की क्या ज़रूरत है !! नोट और सोने के ज़ेवरात छुपाने की क्या ज़रूरत है !! दरवाज़ा खुला रखो ! सामान निकाल कर गली में छोड़ दो ! तक़्दीर में लिखा होगा तो चोरी हो जाएगा वरना चोरी नहीं होगा, बल्कि किसी को नज़र भी नहीं आएगा । सारी बातों में आप तदबीर करते हैं, तक़्दीर पर नहीं छोड़ते, लेकिन बा'ज़ मुआ़मलात में तक़्दीर पर छोड़ देते हैं, जैसे बा'ज़ बेबाक क़िस्म के लोग बोलते हैं कि "यार ! अगर तक़्दीर में जन्नत होगी तो मिल जाएगी, वरना दोज़ख़ मिल जाएगी ।" (مَعَاذَاللّٰہ) तक़्दीर के मुआ़मले में बह़्स करने से ह़दीसे पाक में ह़ज़रत सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को भी मन्अ़ फ़रमा दिया गया था । (معجم کبیر، 2/95، حدیث:1423 مفہوماً) इस लिये तक़्दीर के मुतअ़ल्लिक़ बह़्स न की जाए । हमारा काम बस इतना है कि "وَالْقَدْرِ خَیْرِہٖ وَشَرِّہٖ مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی" या'नी बुरी और भली तक़्दीर **अल्लाह** की त़रफ़ से है ।" हमें **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये । तक़्दीर में बा'ज़ चीज़ें मुअ़ल्लक़ भी रहती हैं । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 1, 1/14 माख़ूज़न) मसलन स्कूटर पर जाएगा तो एक्सीडेन्ट होगा, स्कूटर पर नहीं जाएगा तो नहीं होगा । येह "तक़्दीरे मुअ़ल्लक़" कहलाती है । इस में भी **अल्लाह** पाक को मा'लूम है कि येह स्कूटर पर जाएगा या नहीं जाएगा, लेकिन उस के मा'लूम होने ने इसे स्कूटर पर जाने

या न जाने के लिये मजबूर नहीं किया। मसलन दवा की बोतल पर Expiry date लिखी होती है, कम्पनी वालों को तजरिबे से पता होता है कि येह दवा कब तक कारआमद रहेगी, लेकिन उन के Expiry date लिखने से वोह दवा Expire होने पर मजबूर नहीं होती, अगर कम्पनी वाले नहीं भी लिखते तब भी दवा उसी तारीख़ को Expire हो जाती, लिहाज़ा लिखने और न लिखने से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। इसी त़रह़ तक़्दीर में भी ऐसा नहीं है कि **अल्लाह** पाक ने लिख दिया है, इस लिये बन्दे को करना पड़ रहा है, बल्कि बन्दा जैसा करने वाला था, **अल्लाह** पाक ने वैसा ही अपने इ़ल्म से लिख दिया। (बहारे शरीअ़त, 1/11, ह़िस्सा : 1 मुलख़्ख़सन) **अल्लाह** पाक को सब मा'लूम है, उस से कोई चीज़ छुपी हुई नहीं है।

ख़ौफ़ दूर करने का रूह़ानी इलाज

सुवाल : रात को अचानक आंख खुलने के बा'द बहुत डर लगता है, इस सूरत में क्या किया जाए ? (SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : अगर ऐसा हो तो "يَارَءُوْفُ،يَارَءُوْفُ" पढ़ते रहें, اِنْ شَآءَاللّٰه ख़ौफ़ दूर हो जाएगा।

सच्चाई में अ़ज़मत है

सुवाल : सच के मुतअ़ल्लिक़ कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये, लोग सच को अहम्मिय्यत नहीं देते।

जवाब : एक जुम्ला है : "सांच को आंच नहीं।" जहालत इतनी छा गई है कि अब लोग बोलते हैं कि "झूट के बिग़ैर गुज़ारा नहीं है, झूट नहीं बोलेंगे तो फुलां फुलां काम नहीं होगा।" ह़ालां कि ऐसा नहीं है। सच्चाई की ज़िन्दगी गुज़ारने वाले गुज़ारते हैं। सच्चे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे

ग़ुलाम जिन के मज़ारात पर आज चराग़ां हो रहा है, जिन का उ़र्स मनाया जा रहा है और ईसाले सवाब किया जा रहा है, उन्हों ने दुन्या में सच्चाई के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी है, येही वज्ह है कि आज उन की मौज लगी हुई है। क़ुरआने करीम में हुक्म है : ﴿وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِیْنَ﴾ (پ11، التوبۃ:119) (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और सच्चों के साथ हो) । येह बड़ी ग़लत़ सोच है कि "सच्चाई का ज़माना नहीं है, या झूट के बिग़ैर गुज़ारा नहीं है ।" दर अस्ल ज़ेह्न ख़राब हो चुका है, इस लिये ऐसी बातें की जाती हैं, वरना ह़क़ीक़त येह है कि सच्चाई में अ़ज़्मत है, झूट में कोई अ़ज़्मत नहीं है, बल्कि तबाही व बरबादी है, इस लिये हमेशा सच बोलना चाहिये । अह़ादीसे मुबारका में सच के फ़ज़ाइल मौजूद हैं । (بخاری، 4/125، حدیث:6094)

कारोबार में झूट बोल कर ब ज़ाहिर ऐसा लगता है कि नफ़्अ़ हो गया है, लेकिन हो सकता है कि येही आने वाला नफ़्अ़ सुकून छीन ले । आप अगर मालदारों के अन्दर झांक कर देखेंगे तो आप को सुखी लोग कम मिलेंगे । येह अच्छे कपड़े पहन कर आप के सामने बैठे होते हैं, मगर अन्दरूनी त़ौर पर एक ता'दाद टूटी हुई होती है। किसी को कोई टेन्शन तो किसी को कोई । ज़रूरी नहीं कि येह सब झूट बोलने की वज्ह से ही हुवा हो, कहने का मक़्सद येह है कि इस दौर में झूट बोले बिग़ैर ज़ियादा दौलत जम्अ़ कर लेना बड़ा दुश्वार है। मज़ीद येह कि तिजारत के मसाइल भी पता नहीं होते, यूं भी गुनाहों में पड़ जाते हैं। अगर झूट बोल कर माल बिक भी गया तो उस में बरकत और भलाई नहीं होगी। कभी बीमारी में चले जाएंगे या कभी डाकू उठा कर ले जाएंगे। अगर किसी के साथ ऐसा हो तो इस का मत़लब येह नहीं कि वोह माल ह़राम का था, मैं एक जनरल बात कर रहा

हूं। झूट बोल कर ज़ियादा माल आ भी जाए तो उस में बरकत और सुकून नहीं होता। जो ग़रीब आदमी साबिर और शाकिर होगा वोह आप को पुर सुकून मिलेगा, उस की दुन्या भी पुर सुकून होती है, क्यूं कि उसे फ़ुटपाथ पर भी नींद आ जाती है और उसे इग़वा होने या डकैती होने का भी ख़ौफ़ नहीं होता, क्यूं कि उस के पास इतना माल ही नहीं होता जिस की वज्ह से उसे ख़त़रा हो। और ऐसा ग़रीब ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ मालदार लोगों से 500 साल पहले जन्नत में भी चला जाएगा। (ترمذی،4/157،حدیث:2358) मालदार इस लिये रुका रहेगा कि उस ने अपने माल का ह़िसाब देना होगा और अगर माल ह़राम का होगा तो फिर अ़ज़ाब भी होगा। जो ग़रीब आदमी गिले शिक्वे करता है या दूसरों के माल पर नज़र रखता है उस के लिये येह फ़ज़ीलत नहीं है। (شرح صحیح بخاری لابن بطال،10/173ماخوذا)

बहर ह़ाल ! झूट बोल कर वक़्ती त़ौर पर नजात मिल भी जाए, तब भी झूटे शख़्स का ए'तिमाद ख़त्म हो जाता है, आहिस्ता आहिस्ता लोगों को पता चल जाता है कि इस की ज़बान का ठिकाना नहीं है और फिर वोह लोगों में बदनाम हो जाता है बा'द में सच भी बोलता है तो लोग उस की बात को झूट समझते हैं। जैसा कि एक चरवाहा बकरियां चराता था, एक बार उसे मस्ती सूझी और उस ने जंगल में एक ऊंचे टीले पर चढ़ कर चीख़ना शुरूअ़ कर दिया कि "शेर आ गया, शेर आ गया।" क़रीबी आबादी के लोग डन्डे, भाले और जो हाथ आया ले कर दौड़े, लेकिन जब पहुंचे तो चरवाहा खड़ा हंस रहा था। बात आई गई हो गई। एक बार सचमुच शेर आ गया। चरवाहा फिर टीले पर चढ़ा और चीख़ने लगा : "शेर आ गया, शेर आ गया।" लोगों ने सुना तो बोला कि झूट बोल रहा है, इस का क्या भरोसा !

बा'द में जब लोगों का वहां से गुज़र हुवा तो देखा कि शेर ने उस को चीरफाड़ दिया था और उस की बकरियां भी भाग गई थीं, या उस की बकरियों को शेर ने खा लिया था और चरवाहा ज़िन्दा था, उस ने लोगों से कहा कि तुम लोग क्यूं नहीं आए ? लोगों ने कहा कि पहले तुम ने झूट बोला था, इस लिये हम समझे कि अब भी झूट बोल रहे हो। यूं उस के झूट की वज्ह से उसे नुक़्सान हुवा। झूट में दोनों जहां का नुक़्सान है और इस का एक से एक अज़ाब है।

जान का सदक़ा किस चीज़ से देना बेहतर है ?

सुवाल : लोग मुख़्तलिफ़ चीज़ों का सदक़ा देते हैं, अगर जान का सदक़ा देना हो तो किस चीज़ से देना बेहतर है ?(2)

जवाब : जान का सदक़ा देना हो तो जानवर की जान का सदक़ा दिया जाए। मसलन कोई सफ़र पर जा रहा है तो उस के ज़िन्दा सलामत लौट कर आने के लिये या कोई मरीज़ है तो उस के तन्दुरुस्त होने के लिये कोई मुर्ग़ी वग़ैरा ह़लाल जानवर ज़ब्ह़ कर दिया जाए, या किसी को ज़िन्दा दे दिया जाए कि इसे ज़ब्ह़ कर देना। लेकिन इस में रिस्क फ़ेक्टर येह है कि हो सकता है जिसे ज़िन्दा दें वोह उसे ज़ब्ह़ करने के बजाए आगे बेच दे। मसलन किसी राह चलते फ़क़ीर को मुर्ग़ी दे दी, अब वोह पकाए कहां ? इस लिये वोह जा कर बेच देगा, येही ह़ाल बकरों का भी होता है। इस लिये ख़ुद अपने सामने काटें या किसी क़ाबिले ए'तिमाद आदमी को दें जो बोले कि हम काट देंगे। येह एक बेहतर सूरत बताई है, बाक़ी अगर किसी को ज़िन्दा

---

❷...... येह सुवाल शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अ़त़ा फ़रमूदा ही है।
(शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत)

दिया और उस ने आगे बेच दिया तो येह जाइज़ है और ख़ैरात कहलाएगी। मेरी ज़ियादा तर कोशिश होती है कि नफ़्ली सदक़े के लिये लफ़्ज़ "ख़ैरात" बोलूं। अ़रबी में "ख़ैरात" ख़ैर की जम्अ़ है। उर्दू में राहे ख़ुदा में कोई चीज़ देना ख़ैरात कहलाता है। सदक़े का मा'ना बहुत वसीअ़ है। मुसल्मान के सामने मुस्कुराना भी सदक़ा है। (ترمذی، 3/384، حدیث:1963 ملتقطا) रास्ते से कोई तक्लीफ़ देह चीज़ मसलन पथ्थर और कांटा वग़ैरा हटा देना भी सदक़ा है। (ترمذی، 3/384، حدیث:1963 ملتقطا)

दीनी त़बक़े का दुन्यावी त़बक़े पर रश्क करना कैसा ?

सुवाल : बा'ज़ अवक़ात दीनी त़बक़े से तअ़ल्लुक़ रखने वाले लोगों को दुन्यावी लोगों का रख रखाव देख कर रश्क आता है, ऐसी सूरत में क्या करना चाहिये ?[3]

जवाब : अगर कोई आ़लिम या ह़ाफ़िज़ साह़िब येह सोचें कि "मैं ने इ़ल्म ह़ासिल किया है, इस के इतने इतने फ़ज़ाइल और मर्तबे हैं, लेकिन मेरी इमामत है और तनख़्वाह इतनी सी है, जब कि फ़ुलां शख़्स सूदी इदारे में काम करता है, न उस की दाढ़ी है, न लिबास इस्लामी है और न ही उस के पास इ़ल्मे दीन है, उस की तो इतनी सारी तनख़्वाह है।" तो उन्हें येह कहा जाए कि "ठीक है, आप को बड़ी सर्विस दिला देते हैं, मगर शर्त़ येह है कि आप को इ़ल्मे दीन भुला दिया जाएगा, ह़िफ़्ज़े क़ुरआन भी ख़त्म कर दिया जाएगा, फिर आप ह़ाफ़िज़ साह़िब नहीं रहेंगे, आप ह़ज़रत, मौलाना, دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नहीं रहेंगे, बल्कि Mister कहलाएंगे। क्या आप को मन्ज़ूर

3...... येह सुवाल शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत की त़रफ़ से क़ाइम किया गया है जब कि जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का अ़त़ा फ़रमूदा ही है। (शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत)

है ?" ज़ाहिर है वोह येह सब सुन कर इन्कार कर देगा कि "नहीं, येह नादानी है।" इल्मे दीन और हिफ़्ज़े कुरआन की क़द्र है, अस्ल मालदार आप हैं। उस के पास जो दुन्यावी डिग्रियां हैं वोह क़ब्र में काम नहीं आएंगी, जब कि आप की इल्मे दीन और हिफ़्ज़े कुरआन की डिग्री क़ब्रो आख़िरत में काम आएगी। आप अपना गन्दुम का छोटा दाना देख कर येह बात कर रहे हैं, हालां कि सामने जो ख़ूब सूरती नज़र आ रही है वोह बुलबुला है, उस की तरफ़ हाथ बढ़ाएंगे तो फट जाएगा। जब कि आप का गन्दुम का इतना सा दाना आप की जान और ईमान बचाएगा। येह गन्दुम का दाना आप का सरमाया है। अगर येह भी न हो तो बा'ज़ अवक़ात फ़क़्र इन्सान को कुफ़्र तक ले जाता है।

काम पूरा होते होते क्यूं रह जाता है ?

सुवाल : काम पूरा होते होते रह जाने की क्या वज्ह होती है ?

(SMS के ज़रीए सुवाल)

जवाब : अस्ल वज्ह **अल्लाह** पाक जाने। बारहा ऐसा होता है कि काम होते होते इस लिये रह जाता है कि वोह काम न होने में उस की भलाई होती है। मसलन स्कूटर बनने के लिये दी थी और बहुत ज़रूरी काम से कहीं जाना था। जब बनाने वाले के पास गए तो उस ने बोला कि "कल मिलेगी, एक पुर्ज़ा मुझे मिला नहीं, कल बड़ी मार्केट जाऊंगा, वहां से लाऊंगा।" अब बन्दा पेचो ताब खाता हुवा और बड़बड़ाता हुवा बस में बैठ कर चला गया। अब इस में बेहतरी की सूरत येह है कि हो सकता है "तक़्दीरे मुअ़ल्लक़" येह हो कि अगर येह स्कूटर पर बैठ कर जाएगा तो ट्रक टक्कर मारेगा, इस का सर फ़ुटपाथ से टकराएगा और येह क़ौमे में चला जाएगा या मर जाएगा। येह समझाने के लिये एक मिसाल है कि हमारे हक़ में क्या बेहतर है ? हमें

नहीं पता होता, इस लिये **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहे। **अल्लाह** पाक जो करता है सहीह़ करता है। इस ह़वाले से मक्तबतुल मदीना की किताब "उ़यूनुल ह़िकायात" में गधे, मुर्ग़ और कुत्ते की एक त़वील ह़िकायत[4] मौजूद है। अगर कोई काम नहीं होता तो कोई बात नहीं, आज नहीं तो कल हो जाएगा। हो सकता है उस काम के न होने में ही कोई ह़िक्मत हो। मसलन अगर हम दौलत मन्द नहीं बन रहे तो हो सकता है कि येह हमारे लिये अच्छा

4...... एक नेक शख़्स किसी जंगल में रहा करता था, उस मर्दे सालेह़ के पास एक मुर्ग़, एक गधा और एक कुत्ता था, मुर्ग़ सुब्ह़ सवेरे उसे नमाज़ के लिय जगाता, गधे पर वोह पानी और दीगर सामान लाद कर लाता और कुत्ता उस के मालो मताअ़ और दीगर चीज़ों की रखवाली करता। एक दिन ऐसा हुवा कि उस के मुर्ग़ को एक लोमड़ी खा गई, जब उस नेक शख़्स को मा'लूम हुवा तो उस ने कहा : मेरे लिये इस में बेहतरी होगी, लेकिन घर वाले इस से बहुत परेशान हुए कि हमारा नुक़्सान हो गया। चन्द दिन के बा'द एक भेड़िया आया और उस ने उन के गधे को चीरफाड़ डाला, जब घर वालों को इस की इत्तिलाअ़ मिली तो वोह बहुत ग़मगीन हुए और आहो ज़ारी करने लगे कि हमारा बहुत बड़ा नुक़्सान हो गया, लेकिन उस नेक शख़्स ने कोई बे सब्री वाले जुम्ले ज़बान से न निकाले बल्कि कहा कि उस गधे के मर जाने ही में हमारी आ़फ़ियत होगी। फिर कुछ अ़र्से के बा'द कुत्ते को भी बीमारी ने आ लिया और वोह भी मर गया, लेकिन उस साबिरो शाकिर शख़्स ने फिर भी बे सब्री और नाशुक्री का मुज़ाहरा न किया, बल्कि वोही अल्फ़ाज़ दोहराए कि हमारे लिये इस के हलाक हो जाने में ही आ़फ़ियत होगी। वक़्त गुज़रता रहा, कुछ दिनों के बा'द दुश्मनों ने रात को उस जंगल की आबादी पर ह़म्ला किया और उन तमाम लोगों को पकड़ कर ले गए जो उस जंगल में रहते थे, उन सब की क़ैद का सबब येह बना कि उन के पास जानवर वग़ैरा मौजूद थे जिन की आवाज़ सुन कर दुश्मन मुतवज्जेह हो गया और दुश्मनों ने जानवरों की आवाज़ से उन की रिहाइश की जगह मा'लूम कर ली, फिर उन सब को उन के मालो अस्बाब समेत क़ैद कर के ले गए। लेकिन वोह नेक शख़्स और उस का साज़ो सामान सब बिल्कुल मह़फ़ूज़ रहा, क्यूं कि उस के पास कोई जानवर ही न था जिस की आवाज़ सुन कर दुश्मन उस के घर की त़रफ़ आते। अब उस नेक मर्द का यक़ीन इस बात पर मज़ीद पुख़्ता हो गया कि **अल्लाह** के हर काम में कोई न कोई ह़िक्मत ज़रूर होती है।

(عیون الحکایات،ص121, उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम), ह़िस्सए अव्वल, स. 187)

हो, क्यूं कि हो सकता है कि अगर दौलत मन्द बन जाएं तो नाशुक्रे बन्दे बन जाएं कि माल हो तो गुनाहों के अस्बाब बहुत मिल जाते हैं। अगर माल नहीं होगा तो गुनाहों वाली चीज़ें ख़रीदना भी मुश्किल होगा और यूं आदमी गुनाहों से बच जाएगा। येह भी हो सकता है कि दौलत मन्द बनने के बा'द ग़रीबों को हक़ारत से देखने लगें और तकब्बुर में पड़ जाएं, इस लिये अगर माल नहीं है तो अच्छा है कि बन्दा तकब्बुर की मुसीबत से बचा हुवा है। हमारे पास जो भी कमी है उस कमी पर भी **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा करें, क्यूं कि हो सकता है उस कमी की वज्ह से हम आज़्माइश से महफ़ूज़ हों। हुस्न भी एक आज़्माइश होती है। अगर हुस्न न हो तो बा'ज़ अवक़ात आदमी कुढ़ता है और ऐसा औ़रतों में ज़ियादा होता होगा। लेकिन ऐसा भी तो होता है कि बा'ज़ लड़कियां अपने हुस्न की वज्ह से इग़वा हो जाती हैं या मुसीबत में पड़ जाती हैं, इस लिये अगर किसी के पास हुस्न नहीं है तो येह भी उस के लिये आ़फ़िय्यत की सूरत हो सकती है। **अल्लाह** पाक ने जिस ह़ाल में रखा है, बन्दे को शुक्र अदा करना चाहिये कि **या अल्लाह !** तेरी ह़िक्मत मैं नहीं समझ सकता । बस येह दुआ़ करें : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ الْمُعَافَاةَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ۔ या'नी ऐ **अल्लाह** ! मैं दुन्या और आख़िरत में तुझ से आ़फ़िय्यत या'नी सलामती का सुवाल करता हूं।

❀❀❀❀❀

फ़ज़ाइले आफ़ात और 20 रूह़ानी इ़लाज

❀ **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴾1﴿ मुसल्मान को जो भी तक्लीफ़, बीमारी, दुख, परेशानी, अज़िय्यत और ग़म पहुंचे यहां तक कि अगर उस को कांटा भी चुभ जाए, **अल्लाह** पाक इन के सबब उस के गुनाह मिटा देता है। (بخاری،4/3،حدیث:5641) ﴾2﴿ क़ियामत के दिन जब मुसीबत ज़दा लोगों

को सवाब दिया जाएगा तो आ़फ़ियत के साथ रहने वाले तमन्ना करेंगे कि "काश ! दुन्या में इन की खालें क़ैंचियों से काटी जातीं।" (ترمذی،4/180،حدیث:2410)

﴾3﴿ जो एक रात बीमार रहा, सब्र किया और **अल्लाह** पाक की रिज़ा पर राज़ी रहा तो वोह गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे उस की मां ने उसे आज ही जना हो। (نوادرالاصول،3/147)

जे सोहना मेरे दुख विच राज़ी ते मैं सुख नूं चुल्हे पावां

❀ रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उम्मुस्साइब के पास तशरीफ़ ले गए, फ़रमाया : तुझे क्या हुवा है जो कांप रही है ? अ़र्ज़ की : बुख़ार है, **अल्लाह** पाक इस में बरकत न करे। फ़रमाया : बुख़ार को बुरा न कह कि वोह आदमी की ख़त़ाओं को इस त़रह़ दूर करता है जैसे भट्टी लोहे के मैल को। (مُسلِم،حدیث:2575) ❀ ह़ज़रते अ़त़ा बिन अबू रबाह़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने मुझ से फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें अहले जन्नत में से कोई औ़रत न दिखाऊं ? मैं ने अ़र्ज़ की : ज़रूर दिखाइये। फ़रमाया : येह ह़बशी औ़रत, जब येह नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم के पास आई तो इस ने अ़र्ज़ की : मुझे मिर्गी है जिस की वज्ह से मेरा सत्र या'नी पर्दा खुल जाता है लिहाज़ा **अल्लाह** पाक से मेरे लिये दुआ़ कीजिये। इर्शाद हुवा : अगर तुम चाहो तो सब्र करो और तुम्हारे लिये जन्नत है और अगर चाहो तो मैं **अल्लाह** पाक से तुम्हारे लिये दुआ़ करूं कि वोह तुम्हें आ़फ़ियत अ़त़ा फ़रमा दे। तो इस ने अ़र्ज़ की : मैं सब्र करूंगी। फिर अ़र्ज़ की : मेरा पर्दा खुल जाता है, **अल्लाह** पाक से दुआ़ कीजिये कि मेरा पर्दा न खुला करे। फिर आप ने इस के लिये दुआ़ फ़रमाई। (بخاری،4/6،حدیث:5652)

❀ ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का क़ौल है : जो हर चालीस रात में एक मरतबा भी आफ़त या फ़िक्रो परेशानी में मुब्तला न हो उस के लिये **अल्लाह** पाक के यहां कोई भलाई नहीं। (مُکاشفۃ القلوب،ص15)

मेरे बीमारे बख़्त बेदार ! देखा आप ने ? बीमारी और आफ़त कितनी बड़ी ने'मत है कि इस की बरकत से **अल्लाह** पाक बन्दे के गुनाह मिटाता और दरजात बढ़ाता है, बेशक मरज़ हो या ज़ख़्म, ज़ेहनी टेन्शन हो या घबराहट, नींद कम आती हो या नफ़्सियाती अमराज़, औलाद के सबब ग़म हो या बे औलादी का सदमा, रोज़ी की तंगी हो या क़र्ज़े का बहुत बड़ा बोझ अल ग़रज़ मुसल्मान को मुसीबतों पर सवाब मिलता है, हर सूरत में सब्र से काम लीजिये कि बे सब्री से तक्लीफ़ तो जाती नहीं उलटा नुक़्सान ही होता है और वोह भी बहुत बड़ा नुक़्सान या'नी सब्र के ज़रीए हाथ आने वाला सवाब ही ज़ाएअ़ हो जाता है। याद रखिये ! सब से ख़तरनाक बीमारी कुफ़्र की बीमारी है और गुनाहों की बीमारी भी सख़्त तश्वीश नाक है। आफ़तो मुसीबत और बीमारी व परेशानी लोगों से छुपाना कारे सवाब है। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे पोशीदा रखा और लोगों से शिकायत न की तो **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।" (معجم اوسط، 1/214، حدیث737)

❀ ह़ज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दफ़्आ़ दरिया के किनारे पर एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ फ़रमा थे उन के मुबारक पाउं को चीते ने काट लिया था और ज़ख़्म बेह़द ख़तरनाक सूरत इख़्तियार कर गया था। लोग जम्अ़ थे और उन पर रह़्म खा रहे थे। मगर वोह फ़रमा रहे थे, कोई तश्वीश की बात नहीं येह तो मक़ामे शुक्र है कि मुझे जिस्मानी मरज़ मिला, अगर मैं गुनाहों के मरज़ में मुब्तला हो जाता तो क्या करता ! (گلستان سعدی، ص60)

﴾1﴿ **रोज़ी के लिये :** يَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ 500 बार, अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ 11, 11 बार, बा'द नमाज़े इशा क़िब्ला रू बा वुज़ू नंगे सर ऐसी

जगह पढ़िये कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ हाइल न हो, यहां तक कि सर पर टोपी भी न हो। इस्लामी बहनें ऐसी जगह पढ़ें जहां किसी अजनबी या'नी ग़ैर महरम की नज़र न पड़े। اِنْ شَآءَاللّٰہ रोज़ी की तंगी दूर होगी ﴾2﴿ یَااَللّٰہُ 101 बार काग़ज़ पर लिख कर ता'वीज़ बना कर बाज़ू पर बांध लीजिये, जाइज़ काम धन्दे और हलाल नोकरी में दिल लग जाएगा ﴾3﴿ 7 रोज़ तक हर नमाज़ के बा'द یَارَزَّاقُ یَارَحْمٰنُ یَارَحِیْمُ یَاسَلَامُ 112 बार पढ़ कर दुआ कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ बीमारी, तंगदस्ती व नादारी से नजात हासिल होगी। ﴾4﴿ **चोरी से हिफ़ाज़त :** یَاجَلِیْلُ (ऐ बुज़ुर्गी वाले) 10 बार पढ़ कर अपने मालो अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ चोरी से महफ़ूज़ रहेगा। ﴾5﴿ **शादी के लिये :** जिन लड़कियों की शादी न होती हो या मंगनी हो कर टूट जाती हो वोह नमाज़े फ़ज्र के बा'द یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام 312 बार पढ़ कर अपने लिये नेक रिश्ता मिलने की दुआ करें, اِنْ شَآءَاللّٰہ जल्द शादी हो और ख़ावन्द भी नेक मिले। ﴾6﴿ یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ 143 बार लिख कर ता'वीज़ बना कर कुंवारा अपने बाज़ू में बांधे या गले में पहन ले उस की जल्द शादी हो जाएगी और घर भी अच्छा चलेगा। ﴾7﴿ **औलादे नरीना के लिये :** یَامُتَکَبِّرُ 10 बार, ज़ौजा से "मिलाप" से क़ब्ल पढ़ लेने वाला नेक बेटे का बाप बनेगा ﴾8﴿ हामिला शहादत की उंगली अपनी नाफ़ के गिर्द घुमाते हुए یَامَتِیْنُ 70 बार पढ़े। येह अ़मल 40 दिन तक जारी रखे, **अल्लाह** के फ़ज़्लो करम से बेटा इनायत होगा। इस अ़मल में हर मरज़ का इलाज है। कोई सा भी मरीज़ येह अ़मल करे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ शिफ़ा पाए। (नाफ़ से कपड़ा हटाने की ज़रूरत नहीं, कपड़े के ऊपर ही से येह अ़मल करना है) ﴾9﴿ हामिला के पेट पर हाथ रख कर शौहर इस तरह कहे :

"اِنْ کَانَ ذَکَرًا فَقَدْ سَمَّیْتُہٗ مُحَمَّدًا۔" **तरजमा :** अगर लड़का है तो मैं ने इस का नाम मुह़म्मद रखा" (اِنْ شَآءَاللّٰہ लड़का पैदा होगा। अगर कहते वक़्त अ़रबी इ़बारत के मा'ना ज़ेह्न में हों तो तरजमे के अल्फ़ाज़ कहने की ज़रूरत नहीं वरना तरजमे के अल्फ़ाज़ भी कह लें) ﴾10﴿ **दुश्मन से ह़िफ़ाज़त के लिये :** لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ चलते फिरते उठते बैठते ब कसरत पढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰہ दुश्मन से ह़िफ़ाज़त होगी। ﴾11﴿ **गुमशुदा इन्सान वग़ैरा मिलने और हर ह़ाजत के लिये :** **अल्लाह** पाक की रह़मत पर मज़बूत़ भरोसे के साथ चलते फिरते, वुज़ू बे वुज़ू ज़ियादा से ज़ियादा ता'दाद में يَارَبِّ مُوْسٰی یَارَبِّ کَلِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط पढ़ते रहिये। इसी दौरान चन्द बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये। गुमशुदा इन्सान, सोना, माल, गाड़ी वग़ैरा اِنْ شَآءَاللّٰہ मिल जाएंगे। बल्कि दीगर ह़ाजात के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है। ﴾12﴿ **असरात का रूह़ानी इलाज :** لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ 41 बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर बाज़ू में बांधने या गले में पहन लेने से, اِنْ شَآءَاللّٰہ असरात दूर होंगे। ﴾13﴿ **जादू का रूह़ानी इलाज :** لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ 101 बार पढ़ कर सेह़र ज़दा (या'नी जिस पर जादू किया गया हो उस) पर दम कर दिया जाए या येही लिख (या लिखवा) कर धो कर पिला दिया जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰہ सेह़र (या'नी जादू) का असर ख़त्म हो जाएगा। ﴾14﴿ **अगर नींद न आती हो तो :** अगर नींद न आती हो तो لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ 11 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰہ नींद आ जाएगी। ﴾15﴿ **केन्सर का रूह़ानी इलाज :** अव्वल आख़िर ग्यारह बार दुरूदे इब्राहीमी और दरमियान में "सूरए मरयम" पढ़ कर पानी पर दम कीजिये, ज़रूरतन

दूसरा पानी मिलाते रहिये, मरीज़ वोही पानी सारा दिन पिये, येह अ़मल 40 दिन तक बिला नाग़ा करते रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه शिफ़ा ह़ासिल होगी। (दूसरा भी पढ़ कर दम कर के मरीज़ को पिला सकता है) **《16》 बुख़ार का रूह़ानी इलाज :** يَاغَفُوْرُ काग़ज़ पर तीन बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर गले में डाल या बाज़ू पर बांध दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه हर क़िस्म के बुख़ार से नजात मिलेगी। **《17》 हेपाटाइटिस का रूह़ानी इलाज :** हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ के साथ "सूरए कुरैश" 21 बार (अव्वल आख़िर 11 बार दुरूद शरीफ़) पढ़ (या पढ़वा) कर आबे ज़मज़म शरीफ़ या उस पानी में जिस के अन्दर आबे ज़मज़म शरीफ़ के चन्द क़त़रे शामिल हों, दम कीजिये और रोज़ाना सुब्ह़, दो पहर और शाम पी लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه 40 रोज़ के अन्दर अन्दर शिफ़ायाब हो जाएंगे। (सिर्फ़ एक बार दम किया हुवा पानी काफ़ी है ह़स्बे ज़रूरत मज़ीद पानी मिला लीजिये) **《18》 पित्ते और मसाने की पथरी का रूह़ानी इलाज :** لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه 46 बार सादा काग़ज़ पर लिख कर पानी में धो कर पीने से पित्ते और मसाने की पथरी اِنْ شَآءَاللّٰه रेज़ा रेज़ा हो कर निकल जाएगी। (मुद्दते इलाज : ता ह़ुसूले शिफ़ा) **《19》 दिल और सीने की बीमारियों का रूह़ानी इलाज :** لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه 75 बार पढ़ कर दिल में सूराख़ वाले बच्चे नीज़ घबराहट, दिल और सीने के तमाम मरीज़ों के सीने पर दम करना बि फ़ज़्लिही तआ़ला मुफ़ीद है। **《20》 हर त़रह़ के मरीज़ का रूह़ानी इलाज :** يَامُعِيْدُ दाइमी मरीज़ हर वक़्त पढ़ता रहे, **अल्लाह** पाक सिह़्ह़त इनायत फ़रमाएगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

परेशानियों को दूर करने का अ़मल

ह़ज़रते अबू दरदा رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि जिस ने सुब्ह़ व शाम सात सात मरतबा पढ़ा :

حَسْبِیَ اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ عَلَیْہِ تَوَکَّلْتُ وَھُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ

(तरजमा : मुझे अल्लाह काफ़ी है उस के इलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, मैं उस पर तवक्कुल करता हूं और वोही अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है।) अल्लाह पाक उस की तमाम ह़क़ीक़ी और ख़याली परेशानियों में किफ़ायत करेगा।

(فردوس، 4/416، حدیث: 5081)

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی، کراچی
+92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net